

**मणिपुरी लेखक माइबम नवकिशोर सिंह की 'थम्मोयगी मरी' (दिल का रिश्ता) नामक कहानी संग्रह में चित्रित नारी की समस्याएँ:
येंखोम हेमोलता देवी**

Link : https://santiniketansahityapath.org.in/wp-content/uploads/2025/07/1_Yengkhom-Hemolata-Devi.pdf

सारांश: मणिपुर के प्रसिद्ध लेखक श्री माइबम नव किशोर सिंह की कहानी संग्रह 'थम्मोयगी मरी' (दिल का रिश्ता) में कुल 17 कहानियाँ हैं। इन कहानियों में लेखक ने तत्कालीन मणिपुरी समाज में व्याप्त स्त्री की मूल समस्याओं से लोगों को अवगत कराने की भरसक कोशिश की गई है। इन कहानियों के जरिये लेखक ने पुरुष का अपनी स्त्री के प्रति आस्थाहीन होने एवं सुनी-सुनाई बातों पर अंधविश्वास करने के दुष्परिणामों आदि का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। यही नहीं, स्त्री के प्रति समाज की संकुचित मानसिकता पर भी करारा प्रहार करते हुए पाठक को सोचने-विचारने के लिए मजबूर भी किया है। साथ ही लेखक ने यह बताने का प्रयत्न किया है कि विपत्ति के वक्त पीड़िता के साथ खड़ा होकर अन्याय, अत्याचार से लड़कर न्याय दिलाने वाले खून के रिश्ते से भी बढ़कर होता है।

कूटशब्दाः तत्कालीन, स्त्री, समस्याओं, अवगत, आस्थाहीन, अंधविश्वास, दुष्परिणामों, सजीव, संकुचित मानसिकता, सोचने-विचारने, मजबूर, विपत्ति, पीड़िता, अन्याय, अत्याचार।

मणिपुर के प्रसिद्ध लेखक श्री माइबम नवकिशोर सिंह का जन्म सन् 1940 को कक्चिड जिले के हियाडलम मयाइ लैकाई में हुआ था। उन्होंने अनेक कहानियाँ लिखीं और साहित्य अकादमी एवार्ड, नई दिल्ली (2005) सहित कई सम्मानों से सम्मानित भी हुआ था। उनकी कहानी संग्रह 'थम्मोयगी मरी' का प्रकाशन सन् 2017 को हुआ था। यह एक बहुचर्चित मणिपुरी कहानी-संग्रहों में से है। इसका प्रकाशक है — चांगमयुम शांतिकुमार, पिशुम निड्डोम लैरक, ईरम्दम खोजें अपुनबा लुप, हियाडलम, वाबगाई, इम्फाल, मणिपुर।

इस कहानी-संग्रह में कुल 17 कहानियाँ सम्मिलित हुआ हैं जो इस प्रकार हैं- 1.मुट्लरोइदबा मैचाक, 2.मिनुडशि, 3.साहित्य भूषणगी कोक्येट, 4. बाला माडिखिबदा, 5.पन्थुड अहुम, 6.चाउथोइखोयगी अहल, 7.कबि अमगी पुन्सि वारी, 8.अमम्बा काचिल अमदा, 9.अनाबा हडबा, 10.पाड़ा अमा तम्बीरे, 11.थम्मोयगी मरी, 12.लुहोडबदा लू कोकपा, 13.खम्बल युम्बाल, 14.नोडदमखोल, 15.इज्जत माडहनबीखबा नुपा, 16. सनाजाओबीगी लाइबक और 17.पुखमगा खुजाइगा। इन कहानियों में कई कथावस्तु ऐसी हैं जिनमें लेखक ने मणिपुरी समाज में व्याप्त स्त्री की मूल समस्याओं का उद्घाटन करते हुए वर्तमान समाज में पुरुष का स्त्री के प्रति आस्थाहीन होना, सुनी-सुनाई बातों पर अंधविश्वास करने का दुष्परिणाम, स्त्री के प्रति समाज की मानसिकता, स्त्री को उपभोग की वस्तु समझने वाले आदि पर करारा प्रहार करते हुए पाठकों को पुरुष प्रधान समाज में अकसर दृष्टिगत होने वाले इन पहलुओं पर सोचने-विचारने को मजबूर किया है।

'मिनुडशि' (दयालु) नामक इस कहानी में गाँव का एक विधुर बुजुर्ग तोमचा और उनकी शादी लायक बेटी लोइदाड का वर्णन किया है जो जीविकोपार्जन के लिए बाजार में छोटे-छोटे व्यापारियों को सब्जी बेचकर गुजारा करता है। दोनों बाप-बेटी भाग्य का मारा हुआ है और व्यापार के सिलसिले में इबेचा नामक एक महिला से दोनों का परिचय हो जाता है जो उनसे सब्जियाँ लेकर बाजार में बेचती थी। इबेचा एक संवेदनशील महिला होने के कारण दोनों बाप-बेटी की परिस्थिति को जानकर उनके साथ सहानुभूति पूर्वक व्यवहार

करती है लेकिन वर्तमान समाज में लोगों की संकुचित दृष्टि इसकी इजाजत नहीं दे पाती। यही नहीं, तोमचा की सादगी के कारण उनके रिक्शे में लायी गयी साग-सब्जियों का बाजार में बहुत माँग बढ़ने के कारण सामान को नीचे उतारे जाने से पहले ही बिना मोल-भाव किए नारी व्यापारी पहले अपने-अपने टोकरी में डालने के होड़ में सभी लगी रहती थी और बाद में हिसाब वसूल लिया जाता था। यहाँ तक कि सामान लेते समय व्यापारी आपस में सामानों को छिनना, एक दूसरे को गाली-गलौज देना आदि होती रहती थी। इन स्त्री व्यापारियों में इबेचा का संवेदनशील हृदय उसे दूसरों से अलग बनाती थी। इबेचा लोइदाड के साथ अपनी बेटी जैसा व्यवहार करती थी। उनके दुःख-दर्द में सहभागिता दिखाती थी और साथ ही तोमचा को वह अपने से बड़े एक भाई की तरह मानती थी इसलिए क्रय-विक्रय करते समय किसी को भी नुकसान नहीं पहुँचाती थी। इस सन्दर्भ में दोनों के निम्न वार्तालाप में सामाजिक सादगी एवं मावनतावाद की झलक को देख सकते हैं¹—

इबेचा- मीयाम्ना खुड़ा कौरबनिना ऐसु खुड़ा हेक्ता कौजरगे।

तोमचा- याइदा, याइदा।

इबेचा- इचा इशुदि युम पानबा लोइबिरबा?

तोमचा- इचानुपि रिक्शा इल्लकपीदुदा मडायरे, ऐबु थादोकपा डमददुना लैरिबा, अतैदि लोइना लाइरैपाक तानखे।

फिर, वार्तालाप के दौरान तोमचा अपनी मरी हुई पत्नी की दुर्भाग्यता का वर्णन करते हुए कहता है कि मेरी पत्नी के पिता ने गरीब के साथ शादी रचाने की बात से रूठकर हमेशा के लिए उसे घर से निकाला था और यहाँ तक कि अंतिम दिनों में अपनी बेटी का मुँह तक देखने नहीं आया। गरीबी के कारण बीमारी का इलाज भी ठीक से न कर पाया था इसलिए हम बाप-बेटी कड़ी मेहनत करके कम से कम वार्षिक श्राद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं। इन सब बातों को सुनकर इबेचा का उदार हृदय दोनों के लिए कुछ किए बिना नहीं रह पायी। फिर, उन्होंने एक दिन श्राद्ध के तीन दिन पहले बाजार से श्राद्ध का सामान खरीदकर तोमचा को उसकी सब्जी के बदले थमा दिया क्योंकि उसे पता था कि वे दोनों बाप-बेटी कभी भी श्राद्ध का सामान नहीं ले पायेंगे। उस दिन लोइदाड की तबीयत खराब होने के कारण तोमचा अकेले ही सब्जी बेचने आया था। फिर, इबेचा तोमचा से सब्जी लेकर बस में रख लेने के बाद, श्राद्ध के बाद फिर मुलाकात होगी ऐसा कहती हुई दो टूक बात करके उठी ही थी कि अचानक उसके पति उसके सामने आकर उसका हाथ खींचकर अपने स्कूटर के पास ले जाता है और खरी-खोटी सुनाते हुए बचलन कहकर भीड़ में ही उसे मारना-पीटना शुरू कर देता है। वह अपने पति को समझाने की भरसक कोशिश करती हुई उनके गलतफ़हमी को दूर करने का प्रयत्न करती है पर उनके पति उसके एक भी बात न सुनकर लगातार मारता जा रहा था और अंत में इबेचा शरमिंदगी के साथ बेबश, लाचार व विवश होकर अपनी सफाई दे रही थी। हालाँकि उसके पति कुछ भी सुनने को तैयार नहीं था। इस सन्दर्भ में इबेचा का निम्न कथन द्रष्टव्य है — ‘रिनो, तौबिरिबा असिबु मीगी ममाइदा। ऐखोय इचम चमजबा डाक्नि। नितिगी पोट लौथोक लौशिन तौनबा अहलनि। खल्लिबा वाखन्दु शाना डाना खनगदबा वाखन्नि मैरौ हेन्जिलमल्लि, दोष पुगनि।’² (अर्थात् क्या कर रहे हैं, भीड़ के सामने यह भी। हम लोग सीधे-साधे हैं प्रतिदिन सामान के लेन-देन करने वाले बुजुर्ग हैं। जो आप सोच रहे हैं वह तो केवल पशु ही ऐसा सोच सकते हैं। दोष लगेगा।)

इतना कहने पर भी जब उसके पति उसे एक बदचलन औरत का लांछन लगाकर उसके डायरे को सीमित करता है तो इबेचा कह उठती है कि — ‘युम पाल्लबनि हायदुना नुपी ऐखोयगी ममा ओइबीगी मिनुडशि फाओबा मीडोन्दा पीथोकपा खाइदोकपा याद्रबा। मीओइबगी मिनुडशि फाओबा निपा नखोयगी शम्बल मनुडदा लैगदबनि हायबदु थादोकपियु।’³

इस तरह लेखक ने उद्धृत कहानी में स्त्री के हृदय की मार्मिकता का चित्रण बड़े ही सुन्दर तरीके से किया है। एक तरफ स्त्री जो एक माँ, बहन, बेटा व पत्नी की भूमिका निभाती आ रही है क्या उसे वर्तमान समाज में किसी निस्सहाय के ऊपर ममता व दया भाव रखने की स्वतंत्रता नहीं है यह प्रश्न भी उठाया है। साथ ही चन्द लोगों की संकुचित दृष्टि व सुनी-सुनायी बातों पर अन्धविश्वास करने के दुष्परिणामों से जकड़ी हुई स्त्री की दयनीयता की झलक भी स्पष्ट देखने को मिलता है।

‘पन्थुङ अहुम (तीन लक्ष्य)’ नामक कहानी में लेखक ने समाज में अपने सौन्दर्य मुख एवं आकृति के कारण लक्ष्य प्राप्ति में बाधित एक मेधावी लड़की की छवि दिखाई गई है जिन्होंने किस तरह सामाजिक चुन्नौतियों का सामना करते हुए अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया। इसका सुन्दर एवं मार्मिक बखान किया है। यह कहानी सुमती नामक एक युवती जो एक मेधावी छात्रा होने के साथ-साथ बचपन से ही एक प्रसिद्ध ऐडमिनिस्ट्रेटर बनने का स्वप्न देख रही है उसके ईद-गिर्द कहानी घूमती है। हालाँकि उनका सुन्दर होना ही लक्ष्य प्राप्ति में काँटा बनी हुई है। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है, जो उनके सुन्दर चेहरे से मोह और इर्ष्या न हुई हो। इस सन्दर्भ में भाग्य को कोसता हुआ उनका निम्न कथन द्रष्टव्य है — “हे बिधि नङ्गी खुट्शेम्ना ऐगी पुन्सिगी नीङ्जबा पन्थुङ यौबा डमहल्लोइदौरि। नङ्गा शेम्बा मीओइबना फजबा उरगा कल्लकहल्लिबा करिगीनो। ऐङोन्दा ओइहल्लिबा फजबसि ऐ पामदे, लौथोकपिरो ऐङोन्दगी फजबा पीबिखो पामजबा अमगी मफमदा।”⁴

मैट्रिक पास करने के पश्चात् आगे की पढ़ाई करने इम्फाल के एक भाड़े के कमरे में रहने लगी थी। वहाँ पर भी वह बच न सकी। एक दिन कमरे में वापस लौटते समय रास्ते में एक सड़क दुर्घटना हो गई। हॉस्पिटल में इलाज के दौरान डॉक्टर सुनिल से मुलाकात होती है जो एक उदार, कृपालु एवं संवेदनशील युवक होता है, हालाँकि उसे भी सुमती के सुन्दर चेहरे ने पहले पहल देखते ही मोह लिया था। लेकिन, इलाज के दौरान सुमती से बात करते समय उनकी प्रबल इच्छा को जानकर समाज से उनके सुन्दर चेहरे को छिपाने में मदद करता है ताकि भविष्य में उनका चेहरा दुबारा लक्ष्य प्राप्ति में बाधित न हो सके।

यहाँ पर प्रस्तुत कहानी के ज़रिये एक तरफ लेखक ने मणिपुर में प्रचलित एक परंपरा-प्रेमिका को भगाकर ले जाना, फिर अगले दिन लड़की को सही सलामत अपने घर पहुँचाना और दोनों घरों के बुजुर्गों के सहमती से शादी की तिथि आदि निश्चय करने की रीति-रिवाजों का भी उल्लेख किया है। यही नहीं, इस कहानी में लेखक ने यह भी दिखाया है कि एक नारी ही दूसरी नारी की अवहेलना करती है। इस सन्दर्भ में, IAS उत्तीर्ण करने के बाद DC पद पर नई-नई कार्यरत सुमती को जब डॉ. सुनिल भगाकर ले आता है और यहाँ तक की शादी की बात निश्चित होने के पश्चात् भी डॉ. सुनिल की माँ रानी जो सुन्दरता के पुजारिन है सुमती के बदसूरत मुखौटे को देखकर घृणा करती है और उसके बेटे को सुमती जैसी बदसूरत लड़की को जीवन संगिनी चुनने के लिए कोसती हुई शादी से मना करने अर्थात् तोड़ने के लिए बार-बार कहती रहती है। इस सन्दर्भ में रानी के निम्न कथन देखने योग्य है — ‘हौजिकसु मतम लैरि लुहोडबा डम्लरोइ हाययु, इमाना पामदे हायरिबसि लोइरबनि।’⁵

‘कवि अमगी पुन्सि वारी’ (एक कवि की आत्मकथा) शीर्षक कहानी में लेखक ने मुख्य चरित्र बीरेन के ज़रिये यह बताने की कोशिश किया है कि किस प्रकार उनकी आत्मकथा का असर उनके प्रियतमा शांतिबाला के शादी शुदा खुशहाल जिन्दगी में उथल-पुथल मचाते हुए उसके पति के शक का पात्र बनना पड़ता है। इस संबंध में शांतिबाला अपने पति के शक व लांछन को दूर कराने के लिए बीरेन को किसी भी युवती से विवाह कर लेने का अनुरोध करती हुई कह गये इस कथन को देख सकते हैं — “नङ्दा युम

अमुक्ता पानबियु, माना चिडनरिबसि अमुक्ता कोकहनबियु। नडना युम पान्दबसिना ऐडोन्दा खुरौ अमा ओइरे।⁶

यही नहीं, लेखक ने इस कहानी के ज़रिये समाज में स्त्री के प्रति उस उदासीनता को भी प्रकट किया है जो अनचाहे मर्द द्वारा जबरन किसी युवती को उठाकर अपनी स्त्री बना लेने पर उस स्त्री द्वारा अपने स्वप्नों व इच्छाओं का हनन करना पड़ता है। साथ ही अपने पति के संसार में खुद को ढालती हुई उस वातावरण में समायोजित करने की सक्षम रखती है। लेकिन पुरुष जाति अपने करतूतों को न परखते हुए अपनी ही अर्धांगिनी जो उसपर सब कुछ न्योछावर करती आ रही है उसके चरित्र पर प्रश्नों का बौछार लगा देता है। न उसे उसकी पत्नी की सेवा व समर्पण याद रहती है। यह प्रस्तुत कहानी में स्पष्ट झलकता है।

‘अनाबा हडबा’ (बीमार का हाल-चाल पूछना) शीर्षक कहानी में लेखक ने मुख्य पात्र नुडशिथोइ नामक एक स्त्री जो परिवार के पालन-पोषण के लिए पान दुकान चलाती है उसके माध्यम से समाज में फैल रहे पुरुषों के दुष्कर्मों एवं कुदृष्टि का शिकार बन रही नारी की विवशता का चित्रण किया है। इस सन्दर्भ में चन्द्र द्वारा अपनी पत्नी को कहा गया निम्न कथन द्रष्टव्य है – “फरेने, फरेने नके शेम्मो, नशा नाल्लो पोटशिट फनबा, अदुबु अनानबा पोटसि खुट्ना पायनिडबनि, मतु नानबा हुइ हौदोड फाओबा खुट्ना नान्नीडबनि असिमदि काउदबा फै।” साथ ही समाज में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अभावग्रस्त गरीबों पर मौके का फायदा उठाने के साथ ही साथ मित्रता के नाम पर कलंक व मुखौटे पहनकर समाज को ठगने वाले और भले मानस का नकाब पहनने वाले लोग भी भरमार होते हैं, यह माधप नामक एक पात्र के जरिये दिखाया है। लेखक ने समाज में पनप रही इन बुराइयों पर करारा प्रहार किया है। इस सन्दर्भ में चन्द्र के निम्न स्वकथन को देख सकते हैं – ‘मरुप माधप! अनाबा हडबबु अदुम्ना हडनबा? मदुदि शातना तौगदबनि। शोयदना शिरगदबा ऐनि। शागी नबुकचेन्दुना मरुप अमगी मफमदा चटलिबा शाजट। ओह! पाङ्गलसिना थाडदड थाङ्गटपा डम्लम्लबदि नुडशिथोइगी कना लैबगे खडलमगदबनि।⁸

(अर्थात्, मित्र माधप! बीमार का हालचाल क्या इस तरह पूछा जाता है? ऐसा तो सिर्फ पशु करते हैं। मैं मरने के कगार पर हूँ। ऐसा पशु प्रवृत्ति वह भी एक मित्र के साथ करना। ओह! मेरे शरीर में ताकत होता तो नुडशिथोइ के कौन है यह तुम भी समझ जाते।)

‘थम्मोयगी मरी’ नामक कहानी में लेखक ने इबेतोम्बी नामक एक स्त्री की विवशता का चित्रण करते हुए यह बताने की कोशिश की है कि दिल का रिश्ता जोड़ने के लिए अपने या पराये का होना कोई मायने नहीं रखता बल्कि दिल साफ और सही मददगार होना चाहिए। इबेतोम्बी बाजार में सामान बेचकर घर का गुजारा पूरा करती थी या यूँ कहे कि उनके ऊपर घर का भार चलाने का दायित्व है। इसमें उस एक घटना का चित्रण किया है जिसमें इबेतोम्बी दूर्गा पूजा के त्यौहार के दिन अच्छी बिक्री होने की संभावना और घर के अभावों की पूर्ति में थोड़ा बहुत सहायता की कामना को लेकर दूर गाँव से इम्फाल आती है। वहाँ बाजार उनके लिए नई एवं उतनी परिचित भी नहीं थी। त्योहार के चलते उस दिन सुरक्षाकर्मियों की कड़ी प्रबंध के बावजूद बाजार में बम विस्फोट हो जाता है और भीड़ इधर-उधर भागने लगती है तब वह भी अपनी जान बचाती हुई भागते समय रास्ता भटक जाती है जिसके चलते उनसे गाड़ी पार्किंग खो जाती है। ऐसी गंभीर स्थिति में उसे अपने पति द्वारा पूजा के दिन सामान बेचने न जाने की बात याद आती है। हालाँकि त्यौहारों में सामान की बिक्री हमेशा अच्छी रहती है, वह यह जानती थी, साथ ही अपने अभावग्रस्त निर्धनता में थोड़ा मदद मिल सके बस यही सोचकर निकली थी। इस सन्दर्भ में इबेतोम्बी के पति का यह कथन देखने योग्य है – “पूजा मनुडसिदि पोट योनबा लेप्प। पूजागी खुडोडचाबा लौदुना मीरोल चादबा मीओइ कया थोक्लक्कनि। फट्ट-नुडदा थोक्लबदि ऐदि

यारोइको।⁹ मन में तरह-तरह के अच्छी-बुरी विचार भी पनप रही थी। तभी कुछ गुंडे रात के अंधेरे का फायदा लेकर उनका पीछा करते हैं तो इबेतोम्बी अपनी इज्जत और जान बचाने के लिए चालाकी से नजदीक में बसे एक घर में रिश्तेदारी का ढोंग करती हुई आवाज देकर अपनेपन के साथ घुस जाती है ताकि वे गुंडे संभल जाये। भाग्यवश उसे उस घर में एक सज्जन दंपति भी मिल जाती है। फिर वह दिनभर उसपर घटने वाली सारी घटनाओं को सुनाती है और उनपर घटित दुःखद दास्तान को सुनकर दोनों दंपति का दिल पिघल जाता है। फिर, इबेतोम्बी ने दोनों दंपति के सामने घर लौटने की प्रबल इच्छा प्रकट की और साथ ही, समाज में स्त्री की विवशता एवं स्तर से भली-भाँति वाकिफ वे दोनों दम्पति उसे उसी रात गाँव छोड़ने आँटो से चली आती है। गाँव पहुँचकर केतूकी लम्बी यात्रा के थकान के कारण आँटो में ही थोड़ी देर विश्राम करके आती हैं कहकर अपने पति चाउतोन को बहन समान इबेतोम्बी के साथ उन्हें घर तक सही-सलामत पहुँचाने के लिए भेज देती हैं। दोनों को आते देखकर पहले से ही इबेतोम्बी के घर में जमघट गाँव के लोग ताना मारना शुरू कर देते हैं और इबेतोम्बी के घर में कदम रखते ही उनके शराबी पति अपनी पत्नी को बचलन कहता हुआ मारना शुरू कर देता है। चाउतोन को भाई समान मानने वाली इबेतोम्बी को कुछ भी कहने का मौका न देते हुए साथ ही परिस्थिति को बिना कुछ जानने की कोशिश किए बगैर और अपनी बात रखने का एक भी मौका न देते हुए कैना कटनबगी (जबरन शादी कराने की) व्यवस्था किया जाता है। इस सन्दर्भ में निम्न कथन द्रष्टव्य है जिसमें लेखक ने लोगों द्वारा किए जाने वाले मोब जस्टिज का उल्लेख किया है - 'मीयाम ओनशिन्दुना चाउतोन पुनखे। चै मुनखे मतुडदा ग्यान ताब शाब नुपा-नुपी कया अमा चोडथोरक्ले। लैकाईगी बिचार चटथरे। कन्या कटपदा तारे। लै परेड थौराड तौनखे। इबेतोम्बी हन्जिल्लक्तुना माडगोलगी फक्लाडदा डारगा मचाशिड कोल्लगा कप्पि।'¹⁰ (अर्थात् लोगों ने चाउतोन को घेरकर बाँध लिया। इबेतोम्बी के पति से लाट्ठी छिनकर खुद को समझदार मानने वाले कुछ पुरुष-स्त्री सामने आये। माला की व्यवस्था किया गया। इबेतोम्बी वापस जाकर आँगन की दीवार के सहायता से बच्चों को बाहों में लेकर रो रही है।)

इसी बीच लोगों के कोल्लाहल सुनकर केतूकी विश्राम से खुद को थोड़ा ताजा महशूस करके आँटो से उतरकर सीधा इबेतोम्बी के घर के आँगन पहुँच जाती है। परिस्थिति को देखते ही वह वहाँ घटित सारी घटनाओं का अनुमान कर समझ लेती है और लोगों द्वारा अनजाने में करने जा रहे अनिष्ट कार्य से अवगत कराने की भरसक कोशिश करते हुए निम्न कथन कहती है कि - “नुपा नुपीगी वा अमता तादना ओक्तबा ओक्तबीनि हेक्ता हायबा यात्रा? ऐमक लाक्लमद्रबदि करि थोक्कनि।”¹¹

इतना कुछ कहने के बाद भी जब उपस्थित लोग अपने निर्णय पर अटल होकर दोनों का जबरन शादी कराने में लगे देखकर केतूकी भड़कती हुई लोगों से इस अनिष्ट कार्य के बचाव में अंतिम बार इबेतोम्बी के पति का निर्णय सुनना सही रहेगा कहती हुई इबेतोम्बी को उनके पति के पास ले जाती हुई कहती है कि बाजार में होने वाले विस्फोटक एवं जान व इज्जत बचाकर शरणार्थी बनकर केतूकी के घर पहुँचना और इबेतोम्बी द्वारा अपने बच्चों के पास जाने की प्रबल इच्छा को देखकर विवश होकर उनके पति के साथ बहन समान इबेतोम्बी को वापस घर उनके गाँव पहुँचाने के लिए आना, इन सारी घटनाओं को कह सुनाती है। यह सब सुनकर इबेतोम्बी के पति की आँखें खुल जाती हैं और अपनी पत्नी को बाँहों में ले लेती है। इस तरह कहानी के जरिये लेखक ने एक स्त्री की बेबशी, हृदय की मार्मिकता, लोगों द्वारा न्याय को हाथ में लेते समय तह तक न जाने से होने वाले दुष्परिणामों से परिचित कराने का प्रयत्न करते हुए रिश्तों की गहराइयों का अंकन भी किया है। खून का रिश्ता ही बड़ा नहीं होता बल्कि विपत्ति के समय साथ में रहकर अन्याय, अत्याचार से लड़कर न्याय दिलाना भी जरूरी है जिस तरह केतूकी और चाउतोन ने बिना किसी रिश्ते के सगे भाई-भाभी की तरह इबेतोम्बी के लिए समाज के अन्धकार रूपी अत्याचार से लड़कर न्याय पहुँचाया। यहाँ, पर दिल का रिश्ता जो मानवता का प्रतीक है

उसे लेखक ने सर्वोपरि दिखाया है।

‘खम्बल युम्बाल’ नामक कहानी में लेखक ने चाउबा और चाउबी नामक दो दंपति पात्रों के जरिये पुरुष जाति को परिवार की सुख-समृद्धि के लिए पर-स्त्री का विचार छोड़कर अपनी स्त्री पर प्यार लुटाने और घर के हित के बारे में सोचने में ही सबकी भलाई होती है, यह बताने की कोशिश की है। इस सन्दर्भ में निम्न कथन उल्लेखनीय है – ‘नहालमखै ऐना शाउदुना तौरुरिबा असि ऐना लानबा ओरम्बा तारे, मादि ऐबु नीडदुना लैरम्बा जाटनि, मदुदा, पेन्थोकपा डम्मिबा, वाखल थेनबी नुपीबु नुडशिरुदना कनाबु नुडशिरुनि। हे निपा वाखल तौ। मीगी नुपी नुडशिरुबा वाथोक ओड़गनि। नडगी लोयनबिदा नुडशिबीयु, पुन्सि नुडशाडगनि, इन्शाड हाउगनि, नुपीगी अशेडबा सेबा फडगनि।’¹²

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने मणिपुरी स्त्रियों के सतीत्व पर भी चित्रांकन किया है। ऐसी स्त्री घर में अपने पति के अनुपस्थिति में कोई भी पर पुरुष आने पर चाहे वह उनके पति के कोई पहचान प्रिय दोस्त ही क्यों न हो, बैठने के लिए आसन नहीं दिया जाता है। इस सन्दर्भ में चाउबी द्वारा उनके पति के दोस्त इबोहल को कहा गया निम्न कथन द्रष्टव्य है – ‘सतीदि मपुरोड़बा लैतबा मतमदा मरुप ओड़रबा फाओबा फिदा थानदे।’¹³

इस कहानी में एक स्थान पर चाउबी अपने पति को फोन पर किसी और दूसरी नारी से काम के सिलसिले में मिलने के लिए कहते हुए सुनकर वह अपने पति पर शक करती है और जब उनके दोस्त इबोहल चाउबा को बुलाने आता है तो चाउबी झूठ बोलती हुई कहती है कि वह घर पर नहीं है हालाँकि इबोहल ने उनके दोस्त की झलक देखी थी पर चाउबी के साफ मना करने के कारण उसे उन के चरित्र पर शक करते हुए वापस लौटना पड़ा था और इस घटना का जिक्र जब इबोहल चाउबा को इशारे से बताता है तो चाउबा को मजबूरन उसकी पत्नी पर शक करना पड़ता है। इस प्रकार शक के आधार पर कहा गया एक झूठ स्त्री के सतीत्व पर प्रश्नचिह्न बना देता है।

निष्कर्षतः

इस कहानी संग्रह में सम्मिलित कहानियाँ ज्यादातर स्त्री से संबंधित समाज में प्रतिदिन घटित होने वाली समस्याओं से हैं जो हम देखकर भी नज़रअंदाज़ और अनदेखा करते आ रहे हैं। जैसा कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज में जो भी घटित होता है वह साहित्य में परिलक्षित होना स्वाभाविक है। लेखक ने स्त्री की हर छोटी से लेकर बड़ी समस्याओं को इस कहानी-संग्रह का मुख्य कथानक बनाकर इसके जरिये हमें समाज में स्त्री की वर्तमान स्थिति से परिचित ही नहीं कराया है बल्कि स्त्री की वास्तविक समस्याओं पर गहनता से विचार-विमर्श करने को भी विवश किया है। इस कहानी संग्रह में सम्मिलित कहानियों के जरिये लेखक ने मणिपुरी समाज में व्याप्त स्त्री की मूल समस्याओं को जो एक पुरुष प्रधान समाज में अकसर देखने को मिलता है उसे बखूबी से चित्रित किया है। उपर्युक्त इन कहानियों में हमें स्त्री का विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में संघर्ष, मानवीय संबंधों में आने वाले बिखड़ाव को संजोने की कोशिश, शाश्वत मानवीय संवेदनाओं में हीनता ग्रस्त और स्त्री की दुर्दशा, समाज की मान्यताएँ और पति-पत्नी के सहज, मधुर संबंध में शक के कारण बनने वाली गलत अवधारणाएँ आदि का प्रस्तुतीकरण बड़े ही सहज एवं रोचक तरीके से किया गया है। इस कहानी संग्रह में सम्मिलित कहानियों की भाषा सरल, सहज एवं प्रवाहमयी है। अतः कहा जा सकता है कि इस कहानी-संग्रह में सम्मिलित सभी कहानियाँ पाठक को आरम्भ से लेकर अंत तक बाँधकर रखने में सक्षम एवं रोमांचक होने के साथ ही साथ स्त्री की समस्याओं को बखूबी तरीके से प्रस्तुत भी किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. माइबम नबकिशोर सिंह, थम्मोयगी मरी, चांगम्मयुम शांतिकुमार, पिशुम निङ्डोम लैरक, ईरमदम खोर्जे अपुनबा लुप, हियाडलम, वाबगाई, इम्फाल, मणिपुर, प्रथम संस्करण: अगस्त, 2017, पृ. 12
2. उपर्युक्त वही, पृ. 14
3. उपर्युक्त वही, पृ. 15
4. उपर्युक्त वही, पृ. 28
5. उपर्युक्त वही, पृ. 33
6. उपर्युक्त वही, पृ. 52
7. उपर्युक्त वही, पृ. 64-65
8. उपर्युक्त वही, पृ. 71
9. वही, पृ. 83
10. वही, पृ. 89
11. वही, पृ. 90
12. वही, पृ. 109
13. वही, पृ. 11

लेखक परिचय: डॉ. येँखोम हेमोलता देवी, प्राध्यापक, राजकीय हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, इम्फाल, मणिपुर।